सनातन-धर्म क्या है?

(महाभारत के अनुसार सनातन-धर्म)
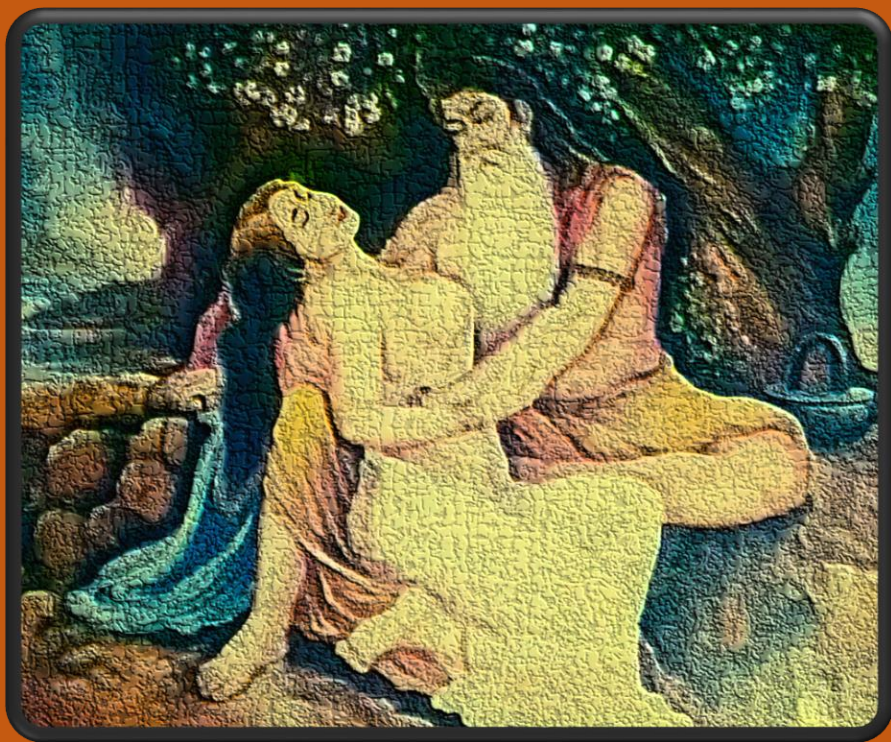
हाय ! सनातन-धर्म, हाय ! सनातन-धर्म. हाय ! सनातन-धर्म

जब से उच्चतम न्यायालय ने यह कहा है कि— **“हिन्दू-धर्म कोई धर्म नही है”** तब से अपने को हिन्दू कहनेवाले लोग ‘धर्महीन’ और ‘नामकरणहीन’ हो गये हैं। जिसके कारण अब कोई टेलीविजन आदि पर भी हिन्दू-धर्म का नाम लेकर बहस नही करता। इसलिए नाम-हीन हुए इन लोगों ने एक नया शब्द खोजा “सनातन-धर्म” उससे ये अपने को सनातन-धर्मवाला कहने लगे हैं और अपने को सनातनी। इससे पहले कोई अपने को इस प्रकार सनातन-धर्मवाला नही कहता था किन्तु आज यह शब्द आम हो गया है। चूँकि समस्या यह है कि अपने को कभी हिन्दू तो अब सनातनी कहनेवाले एक ओर घोर अज्ञानी हैं तो दूसरी और सच को जानते नही हैं। पहले ये हिन्दू क्यों थे यह इन्हें नही पता और अब सनातनी क्यों है यह भी नही इन्हें पता। क्या अपने को सनातनी और सनातन-धर्म कहनेवाले यह जानते हैं कि ‘सनातन’ किसे कहा है? नही जानते तो अच्छी तरह से जान लो सनातन-धर्म क्या है और उसके अनुसार सनातनी कौन हैं? साथ ही उन सबको बताओ जो अब अज्ञानवश सनातन-धर्मवाले हो गये हैं।

.... KP SINGH

सनातन-धर्म क्या है?

महाभारत (पुणे संस्करण) आदिपर्व अध्याय 113 श्लोक 1-30 में सनातन-धर्म के बारे में कहा गया है—

वैशम्पायन उवाच

एवमुक्तस्तया राजा तां देवीं पुनरब्रवीत्।
धर्मविद्धर्मसंयुक्तमिदं वचनमुत्तमम्॥१

अर्थ— धर्मज्ञ राजा पाण्डु देवीसे यह बात सुनकर फिर उससे अच्छा धर्मयुक्त यह वाक्य बोले॥

एवमेतत्पुरा कुन्ति व्युषिताश्वश्चकार ह।
यथा त्वयोक्तं कल्याणि स ह्यासीदमरोपमः॥२

हे कुन्ति! तुमने जो कहा, वह ठीक ही है। व्युपिताश्वने ऐसा ही किया था, क्योंकि वह देववत् थे॥

अथ त्विमं प्रवक्ष्यामि धर्मं त्वेतं निबोध मे।
पुराणमृषिभिर्दृष्टं धर्मविद्भिर्महात्मभिः॥३

पर धर्मज्ञ महात्मा महर्षियोंने पुराणोंमें धर्म का जो तत्त्व दिखाया है, उस धर्मके तत्त्वको मैं तुमसे कहता हूं, सुनो॥

अनावृताः किल पुरा स्त्रिय आसन्वरानने।
कामचारविहारिण्यः स्वतन्त्राश्चारुलोचने॥४

हे सुन्दरि! पूर्वकालमें स्त्रियोंको कुछ मनाई नहीं थी; हे मुधरहासिनी! वे उन दिनों स्वतंत्र अर्थात् पति आदियोंसे न रोकी जाकर भोगके सुखकी आशामें घूमा करती थीं॥

तासां व्युच्चरमाणानां कौमारात्सुभगे पतीन्।
नाधर्मोऽभूद्वरारोहे स हि धर्मः पुराभवत्॥५

हे सुन्दरी! वे कुमारी-दशा हीमें व्यभिचार करती थीं, इससे उनके लिए वह अधर्म नहीं होता था, क्योंकि वही पूर्वकालका धर्म था॥

तं चैव धर्मं पौराणं तिर्यग्योनिगताः प्रजाः।
अद्याप्यनुविधीयन्ते कामद्वेषविवर्जिताः॥६
पुराणदृष्टो धर्मोऽयं पूज्यते च महर्षिभिः॥६

हे सुन्दरि! आजतक तिर्यग् योनिकी प्रजा काम द्वेषसे रहित होकर उस पुराने धर्मके अनुसार चलती है महर्षिलोग भी पुराणसे दर्शाये हुए इस धर्मकी प्रशंसा किया करते हैं॥

उत्तरेषु च रम्भोरु कुरुष्वद्यापि वर्तते।
स्त्रीणामनुग्रहकरः स हि धर्मः सनातनः॥७

हे सुन्दरि! उत्तरकुरुओंमें आजतक इस धर्मकी पूजा हो रही है, क्योंकि वह **सनातन धर्म** स्त्रियोंपर कृपा करनेवाला है॥

अस्मिंस्तु लोके नचिरान्मर्यादेयं शुचिस्मिते।
स्थापिता येन यस्माच्च तन्मे विस्तरतः श‍ृणु॥८

पर थोड़े कालसे इस विषयमें वर्तमान नियम निश्चित हो गया है; जिस कारण तथा जिनके द्वारा यह स्थापित हुआ है, विस्तारपूर्वक कहता हूं, सुनो॥

बभूवोद्दालको नाम महर्षिरिति नः श्रुतम्।
श्वेतकेतुरिति ख्यातः पुत्रस्तस्याभवन्मुनिः॥९

हमने सुना है, कि उद्दालक नामक एक महर्षि थे। उनके श्वेतकेतुके नामसे एक मुनि पुत्ररूपमें उत्पन्न हुए॥

मर्यादेयं कृता तेन मानुषेष्विति नः श्रुतम्।
कोपात्कमलपत्राक्षि यदर्थं तन्निबोध मे॥१०

हे पद्मनेत्रवती! उन्होंने क्रोधित होकर मनुष्योंमें एक मर्यादा बांध दी थी, ऐसा हमने सुना है, जिस कारण उन्होंने यह मर्यादा बांध दी थी, मैं उसे कहता हूं, सुनो॥

श्वेतकेतोः किल पुरा समक्षं मातरं पितुः।
जग्राह ब्राह्मणः पाणौ गच्छाव इति चाब्रवीत्॥११

एक समय एक ब्राह्मण श्वेतकेतुके सामने ही उसकी माताका हाथ थामकर बोला, कि आओ हम चलें॥

ऋषिपुत्रस्ततः कोपं चकारामर्षितस्तदा।
मातरं तां तथा दृष्ट्वा नीयमानां बलादिव॥१२

अनन्तर ऋषिकुमार श्वेतकेतु अन्य पुरुषसे माताको जबर्दस्ती लिवाये जाते देखकर दु:खी और क्रोधित हुए॥

क्रुद्धं तं तु पिता दृष्ट्वा श्वेतकेतुमुवाच ह।
मा तात कोपं कार्षीस्त्वमेष धर्मः सनातनः॥१३

श्वेतकेतुके पिता उद्दालक उनको क्रोधसे कांपते हुए देखकर बोले, कि बेटा! तुम क्रोधित मत होओ, **<u>सनातन धर्म</u>** ऐसा ही है॥

अनावृता हि सर्वेषां वर्णानामङ्गना भुवि।
यथा गावः स्थितास्तात स्वे स्वे वर्णे तथा प्रजाः॥१४

इस भूमण्डलमें सब वर्णोंकी स्त्रियां बिना रोक टोक सबोंसे मिल सकती हैं। हे बेटा! गौके समान सब वर्णोंकी प्रजा भी निज निज वर्णोंसे व्यवहार किया करती हैं॥

ऋषिपुत्रोऽथ तं धर्मं श्वेतकेतुर्न चक्षमे।
चकार चैव मर्यादामिमां स्त्रीपुंसयोर्भुवि॥१५

आगे ऋषिकुमार उस धर्मको सह न सके और भूमण्डलमें स्त्रीपुरुषोंकी यह मर्यादा ठहरायी॥

मानुषेषु महाभागे न त्वेवान्येषु जन्तुषु।
तदा प्रभृति मर्यादा स्थितेयमिति नः श्रुतम्॥१६

हे महाभागे! हमने सुना है, कि तबसे मनुष्य समाजमें यह नियम निश्चित हो गया है; यह दूसरे प्राणियों पर नहीं लागू होता है॥

व्युच्चरन्त्याः पतिं नार्या अद्य प्रभृति पातकम्।
भ्रूणहत्याकृतं पापं भविष्यत्यसुखावहम्॥१७

श्वेतकेतु ने यह नियम बनाया, कि आजसे जो नारी पतिको तजकर व्यभिचार करेगी, उसको दु:खदायी भ्रूणहत्याका पाप लगेगा॥

भार्यां तथा व्युच्चरतः कौमारीं ब्रह्मचारिणीम्।
पतिव्रतामेतदेव भविता पातकं भुवि॥१८

तथा इस भूमण्डलमें जो पुरुष कुमारी ब्रह्मचारिणी तथा पतिव्रता प्यारी स्त्रीको तजकर परायी नारीसे मिलेगा उसके भी वैसा ही पाप लगेगा॥

पत्या नियुक्ता या चैव पत्न्यपत्यार्थमेव च।
न करिष्यति तस्याश्च भविष्यत्येतदेव हि॥१९

जो स्त्री पुत्र पैदा करनेके लिए नियुक्त होकर भी उनकी बात नही मानेगी, उसको भी वैसा ही पाप लगेगा॥

इति तेन पुरा भीरु मर्यादा स्थापिता बलात्।
उद्दालकस्य पुत्रेण धर्म्या वै श्वेतकेतुना॥२०

हे भीरु! उस उद्दालकके पुत्र श्वेतकेतुने बलपूर्वक धर्मके अनुसार यह मर्यादा ठहरायी थी॥

सौदासेन च रम्भोरु नियुक्तापत्यजन्मनि।
मदयन्ती जगामर्षिं वसिष्ठमिति नः श्रुतम्॥२१

हे सुन्दरी! हमने सुना है, कि सौदासकी स्त्री मदयन्ती पतिसे पुत्र पैदा करनेके लिए नियुक्त होकर महर्षि वशिष्ठके निकट गई थी॥

तस्माल्लेभे च सा पुत्रमश्मकं नाम भामिनी।
भार्या कल्माषपादस्य भर्तुः प्रियचिकीर्षया॥२२

और उनसे अश्मक नामक पुत्र प्राप्त किया था। कल्मापपादकी स्त्री उस भागिनीने भर्ताका प्रिय कार्य करने हीके लिये ऐसा किया था॥

अस्माकमपि ते जन्म विदितं कमलेक्षणे।
कृष्णद्वैपायनाद्भीरु कुरूणां वंशवृद्धये॥२३

हे पद्मनेत्रे! तुम यह भी जानती हो, कि कुरुओंका वंश बढानेके लिये भगवान् कृष्णद्वैपायनसे हम लोगोंका जन्म हुआ॥

अत एतानि सर्वाणि कारणानि समीक्ष्य वै।
ममैतद्वचनं धर्म्यं कर्तुमर्हस्यनिन्दिते॥२४

अतएव, हे सुन्दरी! इन सब विषयोंकी भलीभांति आलोचना करके मेरी इस धर्मानुसारी बातको तुम्हें मानना चाहिए॥

ऋतावृतौ राजपुत्रि स्त्रिया भर्ता यतव्रते।
नातिवर्तव्य इत्येवं धर्मं धर्मविदो विदुः॥२५

हे व्रतशीले राजपुत्रि! धर्म जाननेवाले पुरातन धर्मकी यह व्याख्या करते हैं, कि ऋतुकालमें स्त्रीको पतिकी बातका उल्लंघन नहीं करना चाहिए॥

शेषेष्वन्येषु कालेषु स्वातन्त्र्यं स्त्री किलार्हति।
धर्ममेतं जनाः सन्तः पुराणं परिचक्षते॥२६

शेष अन्य समयमें वह स्वतंत्र हो सकती हैं, विद्वान् जन इसे ही प्राचीन धर्म कहते हैं॥

भर्ता भार्यां राजपुत्रि धर्म्यं वाधर्म्यमेव वा।
यद्ब्रूयात्तत्तथा कार्यमिति धर्मविदो विदुः॥२७

हे राजपुत्रि! चाहे धर्म वा अधर्म होवे, पति भार्यासे जो कहे, भार्याको वह अवश्य मानना चाहिए। यह धर्म जाननेवाले कहते हैं॥

विशेषतः पुत्रगृद्धी हीनः प्रजननात्स्वयम्।
यथाहमनवद्याङ्गि पुत्रदर्शनलालसः॥२८

हे सुन्दरी! विशेष मैं पैदा करनेकी शक्तिसे हाथ धो चुका हूं, पर पुत्र पानेकी इच्छा भी रखता हूं, इसलिये हे शुभे! मैं पुत्र देखनेकी इच्छासे॥

तथा रक्ताङ्गुलितलः पद्मपत्रनिभः शुभे।
प्रसादार्थं मया तेऽयं शिरस्यभ्युद्यतोऽञ्जलिः॥२९

तुमको प्रसन्न करनेके लिये लाल उंगलियोंसे सुशोभित इस पद्मपत्र समानके हथेलीको तेरे सिर पर उठाता हूं॥

मन्नियोगात्सुकेशान्ते द्विजातेस्तपसाधिकात्।
पुत्रान्गुणसमायुक्तानुत्पादयितुमर्हसि॥३०
त्वत्कृतेऽहं पृथुश्रोणि गच्छेयं पुत्रिणां गतिम्॥३०

हे सुकेशिनी! तुम मेरे नियोगके अनुसार किसी अच्छे तपस्यायुक्त ब्राह्मणसे गुणवान् पुत्रोंको उत्पन्न करो। हे पृथुश्रोणि! तुमसे मैं पुत्रवान् जनोंकी गति लाभ करूंगा॥

(हिन्दी अनुवाद **श्रीपाद दामोदर सातवलेकर**)

निष्कर्ष- सनातन-धर्म वह है जिसमें स्त्री को भोग की वस्तु माना जाता था।

गीताप्रेस के छपे महाभारत में इन श्लोकों को हटा दिया गया है, जिससे उसकी पुस्तकों को पढ़नेवाले अंधभक्त लोग सनातन की सच्चाई न जान लें। गीताप्रेस न सिर्फ पोल-खोल श्लोकों को हटा देता है बल्कि अनुवाद से भी हेर-फेर कर देता है।